INDIAN SCHOOL AL WADI AL KABIR

Class: VIII	Department: Hindi (2nd Lang)	09.02.25
Worksheet	Topic: अपठित गद्यांश	Note: Pls. slove the worksheet.

प्र 1 – निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

कालिदास उसी डाली को काट रहे थे, जिस डाली पर वे बैठे थे। विद्योत्तमा नामक विदुषी राजकन्या का मान भंग करने का षड्यंत्र करनेवाले विद्वान-वर्ग को वह व्यक्ति(कालिदास) सर्वाधिक मूर्ख लगा,इसलिए उसे ही कुछ लोग लोभ-लालच देकर,कुछ ऊटपटांग सिखा-पढ़ाकर महापंडित के वेश में सजाकर राजदरबार में विदुषी राजकन्या विद्योत्तमा से शास्त्रार्थ कराने के लिए ले गए। उस मूर्ख के ऊटपटांग मौन संकेतों की मनमानी व्याख्या पर षड्यंत्रकारियों ने उस विदुषी से उसका विवाह करा ही दिया, लेकिन वास्तविकता प्रकट हो जाने पर पत्नी के ताने से घायल होकर जब वह घर से निकले, तो कठिन परिश्रम और निरंतर साधना- से निखरकर महाकवि कालिदास बनकर ही घर लौटे। स्पष्ट है कि निरंतर अभ्यास ने उनकी जड़मति को पिघलाकर बहा दिया और जो बाकी बचा था, वह ज्ञान का खरा सोना था।

(i) कालिदास किस डाली को काट रहे थे?

(क) जो डाली उन्हें पसंद आई थी (ख) जिस डाली पर सबसे अधिक पत्ते लगे थे

(ग) जिस डाली पर वे स्वयं बैठे थे (घ) जो डाली सूखी थी

(ii) विद्योत्तमा कौन थी?

(क) विदुषी राजकन्या (ख) महामंत्री की बेटी

(ग) राज्य की संरक्षिका (घ) लकड़हारे की बेटी

(iii) कालिदास को किस वेश में राजदरबार में लाया गया?

(क) मूर्ख लकड़हारे के वेश में (ख) महापंडित के वेश में

(ग) वीर योद्धा के वेश में (घ) सन्यासी के वेश में

4 कालिदास महाकवि कैसे बने ?

----

5 किस घटना से विद्वानों को कालिदास मूर्ख लगे?

प्र 2 – निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

संघर्ष के मार्ग में अकेला ही चलना पड़ता है। कोई बाहरी शक्ति आपकी सहायता नहीं करती है। परिश्रम, दृढ़ इच्छा शक्ति व लगन आदि मानवीय गुण व्यक्ति को संघर्ष करने और जीवन में सफलता प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त करते हैं। दो महत्त्वपूर्ण तथ्य स्मरणीय है – प्रत्येक समस्या अपने साथ संघर्ष लेकर आती है। प्रत्येक संघर्ष के गर्भ में विजय निहित रहती है। एक अध्यापक ने अपने छात्रों को यह संदेश दिया था – तुम्हें जीवन में सफल होने के लिए समस्याओं से संघर्ष करने का अभ्यास करना होगा। हम कोई भी कार्य करें, सर्वोच्च शिखर पर पहुँचने का संकल्प लेकर चलें। सफलता हमें कभी निराश नहीं करेगी। समस्त ग्रंथों और महापुरुषों के अनुभवों को निष्कर्ष यह है कि संघर्ष से डरना अथवा उससे विमुख होना अहितकर है, मानव धर्म के प्रतिकूल है और अपने विकास को अनावश्यक रूप से बाधित करना है। आप जागिए, उठिए दृढ़-संकल्प और उत्साह एवं साहस के साथ संघर्ष रूपी विजय रथ पर चढ़िए और अपने जीवन के विकास की बाधाओं रूपी शत्रुओं पर विजय प्राप्त कीजिए।

(क) मनुष्य को संघर्ष करने और जीवन में सफलता प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त करते हैं

(i) निर्भीकता, साहस, परिश्रम (ii) परिश्रम, लगन, आत्मविश्वास

(iii) साहस, दृढ़ इच्छाशक्ति, परिश्रम (iv) परिश्रम, दृढ़ इच्छा शक्ति व लगन

(ख) प्रत्येक समस्या अपने साथ लेकर आती है–

(i) संघर्ष (ii) कठिनाइयाँ (iii) चुनौतियाँ (iv) सुखद परिणाम

(ग) 'मानवीय' शब्द में मूल शब्द और प्रत्यय है

(i) मानवी + य (ii) मानव + ईय (iii) मानव + नीय (iv) मानव + इय

4 अध्यापक ने अपने छात्रों को क्या संदेश दिया ?

----

5 महापुरुषों के अनुभवों का क्या निष्कर्ष है ?

-